सतत विकास के लिए "स्वछता ही सेवा " अभियान के तहत एकल उपयोग प्लास्टिककीवैकल्पिकव्यवस्था

ढाक के तीन पात.... संपूर्ण देश मे व्यापक "स्वच्छता ही सेवा" के महायज्ञ मे नाथपा झाकड़ी हाइड्रो पावर स्टेशन / एस जे वी एन की तरफ से एक और यज्ञ अर्पण आहु ति.....

ढाक यानी पलाश का वृक्ष इस के पत्ते तीन तीन के समूह में हमेशा एक समान होते है। इसी कारण जब भीपरिस्थितियाँ स्थायी रहती है तथा उन मे कुछ भी बदलाव नहीं दिखता तो "ढाक के तीन पात" वाली कहावत संकेत के रूप में चिर काल से प्रयोग होती रही है।

ढाक या पलाश हिंदुओं के पवित्र माने गए वृक्षों में से एक हैं, इसका उल्लेख वेदों तक में मिलता है।पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से यह बहु उपयोगीबहु आयामी वृक्ष है।

पलास की चोड़ी पत्तियां प्रायः पत्तल और दोने आदि बनाने के काम आती हैं तथा "Single Use Plastic" का पर्याय / पर्यावरण हितेषी विकल्प है। पलाश के फूल टेशू कहलाते हैं और होली पर प्राकृतिक रंग के रूप में आदि काल से उपयोग होते रहे हैं।पलाश की कोमल टहनियां गांव देहात में दांतुन की तरह इस्तेमाल होती है। इस कि जड़ों के रेशे रस्सी बनाने के काम आते है। पतियों का प्रयोग कृमि नाशक व आयूष ओषधि की तरह भी वर्णित है। इस वृक्ष के असंख्य उपयोग हैं।

नाथपा झाकड़ी हाइड्रो पावर स्टेशन के अधिकारियों व कर्मचारियों ने परियोजना के आवास क्षेत्र में ढाक यानि पलाश के वृक्षों का पौधरोपण किया ताकि "सिंगल यूज़ प्लास्टिक से बने प्लेट आदि" के स्थान पर पलास कीपत्तियां से बने पत्तल और दोने आदि काम मे लाये जा सकें।

हम ऐसा मानते है कि परियोजना का यह कदम न केवल पर्यावरण संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण योगदान सिद्ध होगा अपितु भविष्य मे कुछ स्थानीय व्यक्तियों के लिए रोजगार के अवसर भी प्रदान करेगा।